ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

मोतीलाल दास की कविताएँ

बिजली लोको शेड, बंडामुंडा,
राउरकेला – 770 032, ओडिशा
motilalrourkela@gmail.com

जन्म

हमें भूलना होगा
कि हम पैदा हुए थे
और कभी
जिंदा भी थे
तुम्हारे दामन में
चलो जन्म से पहले
जश्न मनाएं मृत्यु का।

कसूर

तुम कुँवारी माँ के गर्भ पर
इतना क्यों बौखलाए
कहीं दबी हुई चिंगारी
तुम्हारे भय का कारण हो
आखिर वो तुम ही तो थे
उस गर्भ को लाने वाले।

मृत्यु

जब मैं मरा
जिंदगी को चुमा
और किया विदा
आगाह भी किया
कि दुबारा नहीं आना है मुझे
इस जिंदगी में
आता है जीना मुझे
जिंदगी के अलावा भी।

जरुरत

जीवन के उहापोह में
कई मायने
आते हैं
चले जाते है
बस बची रहती है
बेहिसाब जरूरतें
जिसे पूरा करने में
जीवन फिसल जाती है
मेरे हाथों से।

सवाल

तुम बचाये रखना
अपना अंतिम सवाल
शायद उत्तर
तुम्हें मिले न मिले
जरुरी है
सवालों का जिन्दा रहना।

.....